

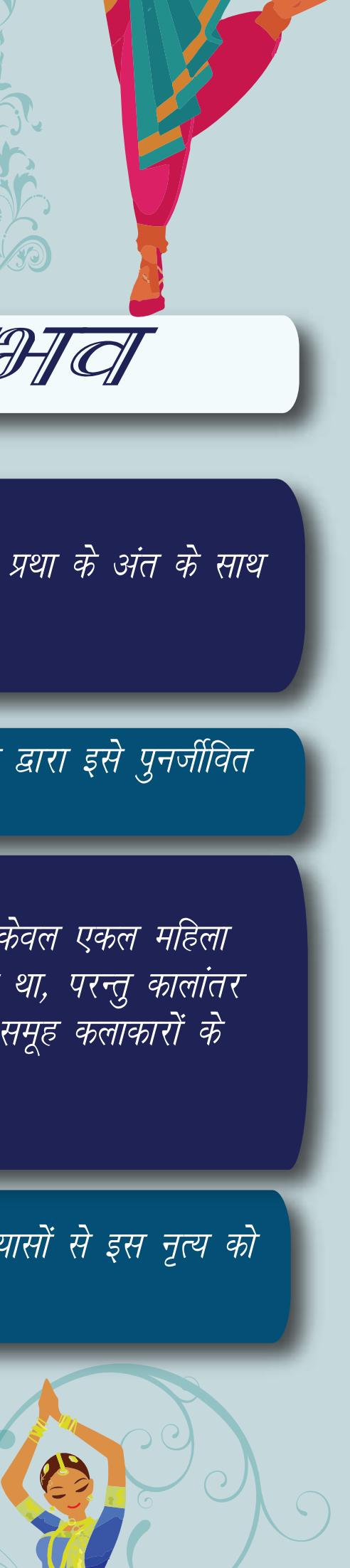
# भारतनाट्यम्

यह भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों में सर्वाधिक प्राचीन है।

भरत मुनि के 'नाट्यशास्त्र' से इसके नाम की उत्पत्ति हुई है।

'सादिर नाट्यम्' में इसकी उत्पत्ति के पदचिन्ह देखे जा सकते हैं। सादिर नाट्यम् एकल नृत्य की एक शैली है। सदियों तक मंदिरों और अंतः दक्षिण भारत के राज-दरबारों, विशेष कर तमिलनाडु में देवदासियों द्वारा इसका प्रस्तुतीकरण किया जाता रहा।

इसे 'दासीअड्डम्', 'चिन्ना मेलम्' और 'सादिर' आदि नामों से भी जाना जाता है।



## उद्दीपन

इसकी उत्पत्ति प्रथम शताब्दी के आरंभ में हुई। देवदासी प्रथा के अंत के साथ यह नृत्य शैली लगभग समाप्त हो गई।



कालांतर में ई.कृष्णा अच्यर द्वारा इसे पुनर्जीवित किया गया।

आरंभ में, इसका प्रदर्शन केवल एकल महिला नर्तकियों द्वारा किया जाता था, परन्तु कालांतर में यह पुरुष नर्तकों और समूह कलाकारों के मध्य भी लोकप्रिय हुआ।

रुक्मिणी देवी अरुण्डेल के प्रयासों से इस नृत्य को वैशिक ख्याति मिली।



अलारिष्ट - पहला नृत्य एक अलारिष्ट है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- फूलों से सजावट। यह ध्वनि अक्षरों के पठन के साथ शुद्ध नृत्य संयोजन का एक अमूर्त खण्ड है।

जातिस्वरम् - यह एक लघु शुद्ध नृत्य है, जिसे विभिन्न मुद्राओं और गतिविधियों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।

शब्दम् - इसमें गायन के साथ अभिनय भी सम्मिलित होता है, जो आमतौर पर सर्वोच्च सत्ता (ईश्वर) की आराधना होती है।

वर्णनम् - इसमें नृत्य और भावनाओं को वर्णनात्मक स्वरूप में ताल एवं राग के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

पदम् - यह कलाकारों के अभिनय की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

जावली - यह लघु प्रेम गीत है जिसका तीव्र गति से प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

